दाई-ए-इस्लाम
सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की

हयात-ए-तय्यबा

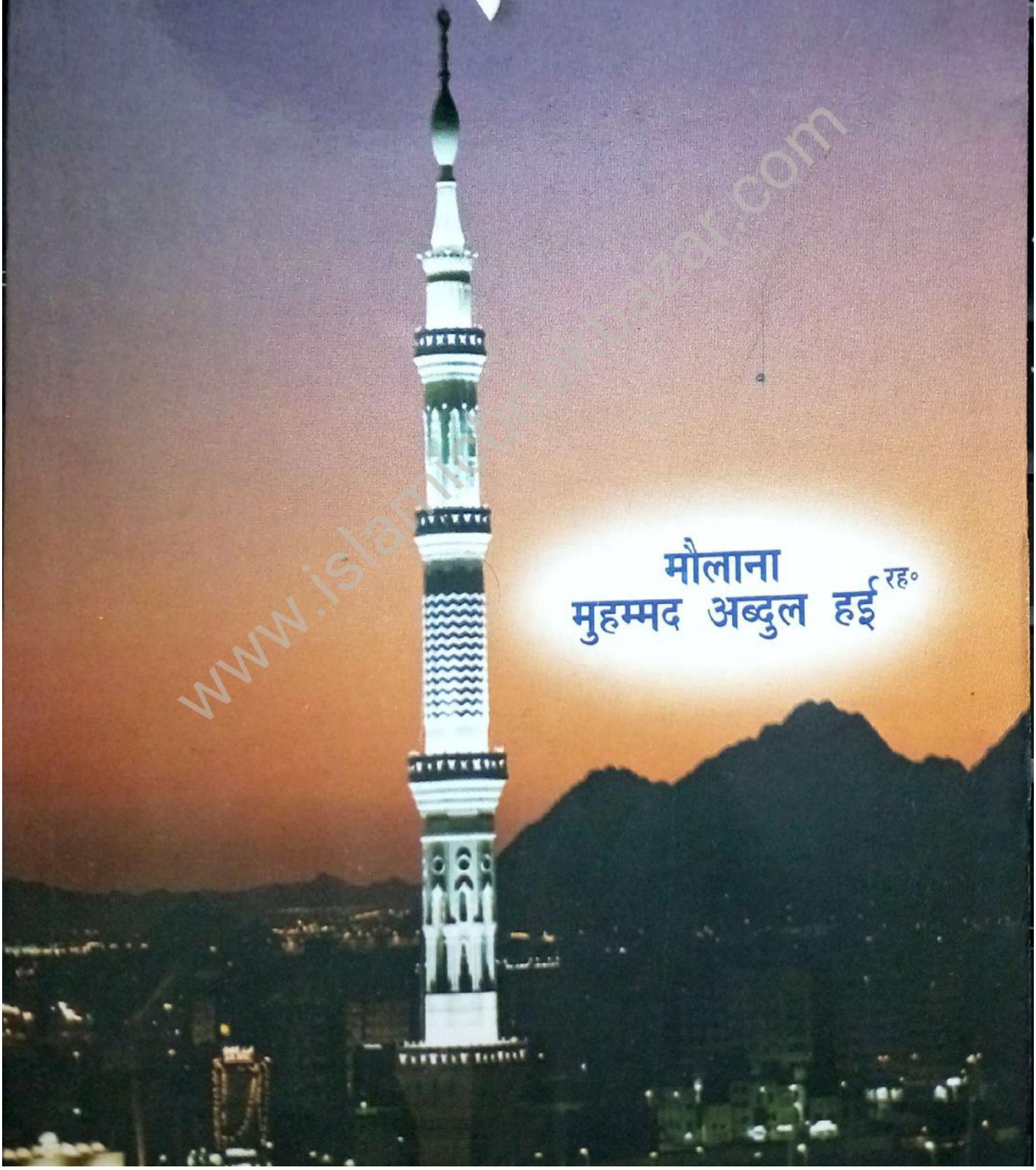

मौलाना
मुहम्मद अब्दुल हई रह०

www.islamicbookbazar.com

ISLAMIC BOOKBAZAR
Brought to you by: www.islamicbookbazar.com
Your friendly & reliable online book store

सूची

पहला बाब

इस्लामी तहरीक और उस से पहले 13
तहरीके इस्लामी की अहमियत 13
तहरीके इस्लामी का एक इम्तियाज़ 15
इस्लाम की दावत के वक़्त दुनिया के हालात 17
रूम की हुकूमत 18
हिन्दुस्तान 19
यहूद 21
अरब की हालत 22
तहरीके इस्लामी के लिये अरब की ख़ुसूसियात 24
अरबों की इस्लाह में मुश्किलात 26

दूसरा बाब

पैदाइश और बचपन 29
ख़ानदान 29
पैदाइश 30
परवरिश और बचपन 31

तीसरा बाब

नुबूव्वत से पहले 34
फ़ुज्जार की लड़ाई 34
हिलफ़ुलफ़ुजूल 34

www.islamicbookbazar.com

ISLAMIC BOOKBAZAR

Brought to you by: www.islamicbookbazar.com

Your friendly & reliable online book store

इस दौर में दावत की ख़ुसूसियात 108
तवक्कुल अलल्लाह और सब्र 108
कुरआन एक मोजिज़ा है 110
दो टोक बात 112
हिजरत के लिये तयारी 113

सातवाँ बाब

हिजरत 116
आम मुसलमानों की मदीना को हिजरत 117
आँहज़रत स० के क़त्ल का मशवरा 118
मक्के से रवानगी 119
ग़ारे सौर में पनाह 120
मदीना तक सफ़र 122
मदीना में तशरीफ़आवरी 123
मदीना में क़याम 125
मस्जिदे नबवी की तामीर 125
मुवाख़ात (भाई बनाना) 126

आठवाँ बाब

दावते इस्लामी एक नये दौर में 128
यहूद से मुआहिदे 131
मुनाफ़िक़ीन 132
क़िब्ले की तबदीली 133

नवाँ बाब

तहरीके इस्लामी की मुदाफ़िअत 135
कुरैश के लिये ख़तरा 136
कुरैश की साज़िश 137

www.islamicbookbazar.com
ISLAMIC BOOKBAZAR
Brought to you by: www.islamicbookbazar.com
Your friendly & reliable online book store

कुरैश पर दबाव	138
हज़रमी का क़त्ल	139
ग़ज़व-ए-बद्र	140
कुरैश की चढ़ाई	141
मुसलमानों की तयारी	142
मदीने से मुसलमानों का कूच	145
लड़ाई का मैदान	145
जंग की इब्तिदा	146
कुरैश की शकिस्त	148
जंगे बद्र के नताइज और असरात	149
जंगे बद्र पर तबसरा और मोमिनीन की तर्बियत	149
ग़ज़व-ए-उहुद	158
असबाब	158
कुरैश की पेशक़दमी	160
मुनाफ़िकों का धोका	160
नवजवानों का जोश	161
फ़ौज की तरतीब	161
कुरैश का साज़-ओ-सामान	162
लड़ाई की इब्तिदा	162
कुरैश का पीछे से हमला	163
अल्लाह की मदद और फ़त्ह	164
इब्तिदाई शकिस्त के असबाब और-	
मुसलमानों की तर्बियत	165
तवक्कुल	166
माल की मुहब्बत	167

www.islamicbookbazar.com

ISLAMIC BOOKBAZAR
Brought to you by: www.islamicbookbazar.com
Your friendly & reliable online book store

पहला बाब

इस्लामी तहरीक और उस से पहले

इस्लाम या मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पैग़ाम दुनिया की एक अज़ीमुश्शान इस्लाही तहरीक है। वही तहरीक जिसे हर ज़माने और हर मुल्क में अल्लाह के भेजे हुये नबी लाते रहे हैं। इस तहरीक ने ना सिर्फ़ रूहानी बल्कि इंसानी ज़िन्दगी के हर हिस्से की ऐसी इस्लाह की है जिस की मिसाल नहीं मिल सकती। यह एक ऐसी हमागीर तहरीक है जो एक ही वक़्त में रूहानी, अख़लाक़ी, मुआशरती और सियासी सब कुछ है। और जिस के दाएरे से इंसानी ज़िन्दगी का कोई गोशा बाहर नहीं।

तहरीके इस्लामी की अहमियतः- दुनिया में इस्लाही और इंक़लाबी तहरीकें बहुत सी उठती रही हैं लेकिन इस्लामी तहरीक अपनी बड़ाई और कुछ दूसरी ख़ुसूसियात के एतबार से उन सब से मुमताज़ है। इस तहरीक का उठान किस तरह हुआ? इस को पेश करने वाले ने किस तरह पेश किया और इस का क्या रद्देअमल हुआ। यह सवालात हर उस ज़हन में पैदा होते हैं जिस को शुरू से इस तहरीक का कुछ न कुछ तआरूफ़ होता है। लेकिन इन सवालात के जवाबात मालूम कर लेना सिर्फ़ तारीख़ जानने के शौक़ को ही पूरा नहीं करती है। बल्कि उन

www.islamicbookbazar.com

ISLAMIC BOOKBAZAR
Brought to you by: www.islamicbookbazar.com
Your friendly & reliable online book store

के वुजूद से सारे आलम की अंधियारियों को दूर होना था और इंसानियत को वह नूरे हिदायत मिलना था जो क़यामत तक इस ज़मीन पर बसने वाले सारे इंसानों के हक़ में मालिके कायनात की सब से बड़ी नेमत है। वालिद का तो इंतिक़ाल ही हो चुका था। दादा अब्दुल मुत्तलिब ने आप का नाम मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) रखा।

परवरिश और बचपनः- सब से पहले आप की वालिदा माजिदा हज़रत आमिना ने दूध पिलाया, उस के बाद अबू लहब की लौंडी सौबिया ने भी दूध पिलाया। इस ज़ामने में यह रिवाज था कि शहर के बड़े लोग अपने बच्चों को दूध पिलवाने और पलने बढ़ने के लिये दीहात और क़स्बात में भेज देते थे। ताकि वहाँ की खुली हवा में रह कर उन की सेहत अच्छी हो जाये। और वह बहुत फ़सीह अरबी ज़ुबान भी सीख जाएँ। अरब में शहरों की बनिस्बत दीहात और क़स्बात की ज़ुबान बहुत ज़्यादा फ़सीह और अच्छी मानी जाती थी। इस दस्तूर के मुताबिक़ दीहात की औरतें शहर में आया करती थीं और बच्चों को परवरिश के लिये अपने साथ ले जाती थीं चुनाचे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाइश के कुछ रोज़ बाद ही क़बील-ए-हवाज़िन की कुछ औरतें बच्चों की तलाश में मक्के आईं। उन में हलीमा सअदिया भी थीं। यही वह ख़ुशनसीब ख़ातून हैं जिन को जब कोई दूसरा बच्चा न मिला तो उन्हों ने मजबूरन आमिना के यतीम बच्चे को ही ले लेना मंज़ूर कर लिया।

दो साल के बाद हलीमा सअदिया आप को वापस लाईं लेकिन उस ज़माने में मक्के में कोई बीमारी फैली हुई थी चुनाचे

ISLAMIC BOOKBAZAR
Brought to you by: www.islamicbookbazar.com
Your friendly & reliable online book store

तयार करें। और इस अहम काम को अंजाम देने के लिये क्या क्या सूरतें इख़्तियार करें।

छुप कर नमाज़ें:- अभी जो कुछ हो रहा था पोशीदा तौर पर हो रहा था। निहायत एहतियात की जाती थी कि भरोसे के क़ाबिल लोगों के अलावा बात कहीं बाहर न जाये जब नमाज़ का वक़्त आता तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी पहाड़ की घाटी में चले जाते और वहाँ नमाज़ अदा करते। एक बार आप हज़रत अली रज़ि० के साथ किसी दर्रे (घाटी) में नमाज़ पढ़ रहे थे। इत्तेफ़ाक़ से आप के चचा अबूतालिब आ निकले और इबादत के इस नये तरीक़े को देर तक तअज्जुब के साथ देखते रहे। नमाज़ के बाद पूछा "यह कौन सा दीन है"? आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "हमारे दादा इब्राहीम (अलै०) का दीन है"। अबूतालिब बोले ख़ैर मैं तो इसे इख़्तियार नहीं कर सकता। लेकिन तुम को इजाज़त है। कोई शख़्स तुम्हारी मुज़ाहमत (रोक) न कर सकेगा।

इस दौर के मोमिनीन की ख़ुसूसियात:- इस इब्तिदाई दौर की ख़ुसूसियत यह है कि उस वक़्त इस्लाम क़ुबूल करना और फिर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का साथ देना गोया जान पर खेल जाना था। इस दौर में जिन लोगों ने आगे बढ़ कर इस दावत को क़ुबूल कर लिया इन में यक़ीनन कुछ ऐसी ख़ुसूसियात थीं जिन की बुनियाद पर वह इस मैदान में आगे बढ़ सके। उन की चन्द मुशतरक (शरीक) ख़ुसूसियात यह हैं कि यह लोग पहले से मुश्रिकाना रुसूम व इबादात से बेज़ार थे और हक़ की तलाश में थे। तबीयत के एतबार से यह लोग नेक और पाकीज़ा अख़लाक़ वाले थे।

ISLAMIC BOOKBAZAR
Brought to you by: www.islamicbookbazar.com
Your friendly & reliable online book store